10

दोएग

विश्वासघात के कामों का प्रतिफल

(21:1-22:22)

समुद्र तट पर पानी के नीचे की खतरनाक चट्टानों को चिह्नित किया गया होता है। ये चट्टानें देखने में तो बड़ी सीधी लगती हैं परन्तु होती बहुत खतरनाक हैं। लापरवाह तथा बाहरी नाविकों को उनके खतरे से चौकस करने की खबरें आती रहती हैं। ये चट्टानें उस ''विश्वासघाती व्यक्ति'' की तरह हैं जो देखने में तो भोला-भाला लगता है परन्तु वास्तव में ज़हर तथा मृत्यु से भरा हुआ है।

1 शमूएल में एदोमी दोएग ऐसे ही विश्वासघात का प्रतीक है और उसकी तरह का जीवन व्यतीत करने वालों के सब लोगों के लिए एक चेतावनी है।

दोएग को एदोमी के रूप में दिखाया गया है। वह इस्राएली नहीं बल्कि एसाव का एक वंशज अर्थात विदेशी था। दोएग के लोगों तथा इस्राएल में शत्रुता थी। शिक्षा तथा व्यवहार से वह आने वाले मसीहा के लिए सहानुभूति में हिस्सेदार नहीं हो सकता था। स्पष्टतया दोएग इस्राएल के विश्वास से फिर जाने वाला बना ज़्योंकि वह नोब में एक धार्मिक रीति का पालन कर रहा था (21:7)। वह प्रधान चरवाहे के पद से सुशोभित शाऊल के दरबार का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था।

उसके विश्वासघात के काम

1 शमूएल के पाठक को दोएग का विश्वासघाती स्वभाव स्पष्ट हो जाता है। जान बचाने के लिए भागते भागते दाऊद नोब में मंदिर में चला गया था। शीलो के विनाश के बाद स्पष्टतया शाऊल ने तज़्बू और इसकी सेवाओं को नोब में तबदील कर दिया। दाऊद के दिन बुरे थे। परमेश्वर में उसका विश्वास कमज़ोर पड़ गया था और उसे अपनी ही सामर्थ के सहारा था। उसने महायाजक से झूठ बोलकर गोलियत की तलवार और पवित्र की हुई कुछ रोटियां ले लीं। दोएग को देखकर वह जल्दी से नोब से निकल गया।

धार्मिक रीति को पूरा करने के बाद दोएग ने सीधे शाऊल के पास जाकर सारा हाल सुनाया। कुछ लोगों का सुझाव है कि दोएग का समाचार पहले तो अकेले में बताया गया था और फिर 22:6से आगे की सार्वजनिक सभा में। दोएग ने अपने शज़्दों को ऐसे रूप दिया था कि उसने बोला तो सच था परन्तु उस सच को एक और रूप देने के लिए तोड़ा-मरोड़ा गया

था (22:9, 10)। उसकी बातों से शाऊल का क्रोध भड़क गया और उसने निर्दोष याजकों को दोषी ठहराकर समस्त याजकाई को बे-रहमी से मरवा डाला। जब राजा के सेवकों ने इस भयंकर और नृशंस कृत्य को करने से इन्कार कर दिया, तो शाऊल ने दोएग से कहा, ''तु मुड़कर याजकों को मार डाल।'' और उसने उन्हें मार डाला। दोएग ने इसकी योजना बनाई, इस योजना को अंजाम देने के लिए शाऊल को उज़साया, घृणा के कारण निर्दोष लोगों का कत्ल करवाया और फिर अपनी ''बहादुरी'' के इस कृत्य की डींग मारी! पूरी बाइबल में इतने कायर हत्यारे के बारे में कहीं मिलता है? जब दाऊद को एकमात्र बचने वाले व्यज़्ति ने सामूहिक हत्याकांड की जाकर खबर दी, तो भजन संहिता 52 लिखा गया था।

उसका विश्वासघाती व्यवहार काम करता है

विश्वासघात के काम दोएग के स्वभाव में थे। आइए उन्हें ध्यान से देखें ज़्योंकि हो सकता है कि हम में भी दोएग जैसे अवगुण पनप जाएं!

उसने अपनी जीभ का इस्तेमाल गैर ज़िज़्मेदारी से किया (22:9, 10; भ.सं. 52:2, 4)। दोएग यह कहने में असफल रहा कि महायाजक ने दाऊद से प्रश्न पूछने की कोशिश की थी। दोएग ने अपने शज़्द अपना लक्ष्य को पूरा करने के लिए बदल लिया, और उसका लक्ष्य महायाजक को मुसीबत में डालना था! भजन संहिता 52:2 को मूलत: इस प्रकार पढ़ा जाता है कि वह ''विश्वासघात से काम कर रहा'' था। हर बार में सावधानी बरतते हुए उसने अपनी चाल चली। उसने अपनी जीभ का इस्तेमाल याजकों का नाश करने के लिए किया (22:4)। मीठी-मीठी बातें दूसरों को विनाश तथा तबाह कर सकती हैं।

असावधान जीभ के किसी विश्वासघाती का पता कैसे चलता है! याकूब 3:6 कहता है, ''जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुंड की आग से जलती रहती है।'' पाप के प्रलोभन में पड़ना और ऐसी बातें कहना जो दूसरों के लिए विनाशकारी हैं, कितना आसान है। दोएग ने झूठी बातें कहकर परमेश्वर के लोगों का नाश किया। जब हम अपनी जीभ को काबू में नहीं रख पाते तो ऐसा ही होता है। गृहयुद्ध की निराशाजनक स्थिति के दौरान अब्राहम लिंकन ने अपने सेनापतियों की मीटिंग बुलाई। उनमें से एक बहुत ही बातूनी था और चुप नहीं बैठता था। बातूनी जरनैल के सिर के बाल तो बिल्कुल काले थे जबकि दाढ़ी सफ़ेद थी। लिंकन के पास बैठे एक जरनैल ने पूछ लिया कि उस जरनैल के बाल काले और दाढ़ी सफेद ज़्यों है। लिंकन ने कहा, ''ज़्योंकि वह अपने सिर के बजाय जबाड़े से अधिक काम लेता है!'' गैर ज़िज़्मेदारी से बोलने वाले सब लोगों के लिए यही बात सच है!

वह स्वार्थ से चलता था। दोएग ने पूछा, ''मेरे लिए ज़्या रखा है?'' उसने अपने आप को संसार का केन्द्र बना लिया था। शाऊल बावला हो गया था और उसने अपेन आस पास के सब लोगों से पूछा (22:8)। दोएग इस परिस्थिति का लाभ उठा रहा था।

यहीं पर हर प्रकार के विश्वासघात का आधार बनता है। स्वार्थी होने पर परमेश्वर

दिखाई नहीं देता। स्वार्थ के कारण ही दोएग लोभी हो गया। शाऊल का समर्थन पाने के लिए वह कुछ भी कर सकता था! भजन संहिता 52:7क से पता चलता है कि स्वार्थ ने उसे सांसारिक बना दिया था (रोमियों 1:28)।

कितने दुख की बात है कि आज भी लोग दोएग की तरह ही अपने आप को चलाते हैं। ये लोग इस तथ्य से अनजान हैं कि वे विश्वासघात की ओर बढ़ रहे हैं (1 यूहन्ना 2:15; फिलिप्पियों 2:4; भ.सं. 52:7क)।

वह कायर था। ''दोएग'' का मूल अर्थ कायर या डरपोक है। स्पष्टतया दोएग की बात बन जाती तो उसने अपनी बुराई से काम ले ही लिया होना था। भजन संहिता 52:1 कहता है, ''हे वीर, तू बुराई करने पर ज़्यों घमण्ड करता है? ईश्वर की करुणा तो अनन्त है।'' कितना घृणाजनक है बुराई पर घमण्ड करना! उसने इसका श्रेय लेकर अपने आप को सब के सामने दिखाने के लिए सजाकर रख दिया था। यह विश्वासघाती व्यज़्ति का स्पष्ट चित्रण है कि वह घमण्डी और अधर्मी होता है। ''स्वार्थ'' अपने लिए करने से प्रीति रखता है और दोएग ने इसे अच्छी तरह समझा दिया (रोमियों 11:25; 12:16)।

वह घृणा से भरा हुआ था। उसमें सहानुभूति या दया नहीं थी। दोएग की क्रूरता चकित कर देने वाली लगती है जब यह समझ आ जाता है कि उसे नवजात शिशुओं पर कोई तरस न आया, बज़ुर्गों के लिए उसके मन में कोई सज़्मान नहीं था और जीवन का कोई महत्व नहीं थी। वह घृणा से इतना भरा हुआ था कि उसने जान-बुझकर निर्दोष याजकों के विषय में शाऊल को गुमराह किया।

विश्वासघात निर्दोष का नहीं अपना ही सज़्मान करता है। विश्वासघाती व्यज़्ति का सबसे बड़ा उद्देश्य अपना लाभ होता है। यदि उसे कोई मना करता है, तो उसकी घृणा दूसरे पर उतर कर उसका नाश कर सकती है!

उसे परमेश्वर में भरोसा नहीं था। भरोसे की उसकी कमी का आराधना में उसके व्यवहार से पता चलता है। तज़्बू अर्थात मन्दिर में होकर भी वह परमेश्वर से दूर था (भजन संहिता 52:7क)। उसने कागज़ तो पढ़े पर आत्मा न पाया, ऐसा आज भी है (1 तीमुथियुस 2:8ख)।

विश्वासघाती व्यज़्ति परमेश्वर पर निर्भर नहीं होता है। घृणा का शिकार बना व्यज़्ति कल्पना करता है कि परमेश्वर उस पर निर्भर है। विश्वासघाती मनुष्य अपने ही मानक ठहराता है और उन्हें ही नियम मानता है। विश्वासघाती व्यज़्ति प्रेम के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को सुन नहीं सकता।

विश्वासघाती मनुष्य की तस्वीर भजन संहिता 52:3 में दो क्षेत्रों में आनन्द करते हुए दिखाई गई है: (1) परमेश्वर की भलाई को ठुकराकर नैतिक क्रम को लात मार दी जाती है और (2) परमेश्वर की धार्मिकता को भुलाकर वाचा का क्रम तोड़ डाला जाता है।

उसके विश्वासघात का गंभीर प्रतिफल

दोएग के जीवन के वृज़ांत से पता चलता है कि विश्वासघात चाहे कैसा भी हो उसका

उज़र मिल जाएगा (होशै 10:13क)। दोएग के विश्वासघात के अंत में बड़े दुखद परिणाम सामने आए।

इसका इनाम और अधिक पाप में डूबने से मिला था (भजन संहिता 53:3)। पाप का ''नशा'' बढ़ जाता है जिससे विश्वासघाती मनुष्य बच नहीं सकता। दूसरा पतरस 2:14 कहता है, ''उनकी आंखों में व्यभिचारिणी बसी हुई है, और वे पाप किए बिना रुक नहीं सकते: वे चंचल मन वालों को फुसला लेते हैं; उनके मन को लोभ करने का अज़्यास हो गया है, वे संताप के संतान हैं।'' परमेश्वर को ठुकराकर शीघ्र ही वह अपने आप को गप्पें मारने वाला, कड़वाहट तथा घृणा से भरा हुआ पाता है (52:3), विश्वासघाती मनुष्य गलती ही करता है (रोमियों 1:21-24)। कितना बुरा प्रतिफल है!

इसका पुरस्कार विनाश के रूप में मिलता है (भजन संहिता 52:5)। परमेश्वर के न्याय का वर्णन प्रगतिशील शज़्दों में किया गया है। पहले, ''पराजय'' होती है, फिर ''निष्कासन'' और अंत में ''विनाश'' होता है। इस प्रकार परमेश्वर हमें चेतावनी देता है कि यदि तीव्र, तुरन्त और निर्णायक परिवर्तन नहीं होता तो दुखद अंत आने वाला है (लूका 13:3)।

इसका *पुरस्कार* अलगाव के रूप में मिलता है (22:22)। स्वभाव का पता चल जाएगा और वह प्रसिद्धि जो किसी समय बड़ी महत्वपूर्ण लगती थी, जाती रहेगी। दाऊद जानता था कि दोएग कैसा है और उसने उसके साथ कोई सज़्बन्ध न रखना चाहा। आज भी विश्वासघाती व्यज़्ति के साथ ऐसा ही होता है। कोई उसके साथ नहीं रहना चाहता। उसकी स्वार्थी महत्वाकांक्षा, तेज़ ज़ुबान और घृणाजनक है।

सारांश

दोएग से हमें एक सबक सीखने को मिलता है: स्वार्थ हमारे जीवनों में विनाशकारी मार्ग लाता है! दोएग में हम ''अंधी महत्वाकांक्षा'' के आतंक को पाते हैं। एक ऐसा अनकहा अंत उन सब लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है जो संसार में उसके रास्ते चल रहे हैं। ''अंधी महत्वाकांक्षा'' स्वार्थ है जब इसका इस्तेमाल दोएग की तरह किया जाता है। लगता है कि दोएग सफल हो गया अर्थात उसे राजा की स्वीकृति आदि मिल गई थी, परन्तु केवल थोड़ी देर के लिए ही। फिर उसने अविश्वसनीय पीड़ा, बुराई तथा पाप की कटनी देखी (भजन संहिता 52:5)।

हर मनुष्य के लिए जीवन में दो विकल्प लेते हैं। हम परमेश्वर के साथ रहकर हर बात में उसके वचन को मान सकते हैं। हो सकता है कि हम धनवान तथा प्रसिद्ध न हों, परन्तु संतुष्ट अवश्य होंगे। भजन संहिता 52 इन शज़्दों के साथ समाप्त होता है।

> परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जलपाई के वृक्ष के सज़्मान हूं। मैंने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिए भरोसा रखा है। मैं तेरा धन्यवाद करता रहूंगा, ज़्योंकि तू ही ने यह काम किया है। मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूंगा, ज़्योंकि

यह तेरे पवित्र भक्तों के साक्ष्हने उज़म है (भजन संहिता 52:8, 9)।

या, हम परमेश्वर के बिना अपने ऊपर भरोसा रखकर अपने विश्वासघात के फल काटकर जीवित रह सकते हैं। असंज्य लोग अपनी सेनाएं लेकर बुत बनाने, राष्ट्र निर्माण करने तथा सेनाओं पर विजय पाने के लिए संसार भर में घूमे हैं। ये वास्तव में ''मज़बूत'' लोग नहीं हैं। उनकी पराजय आएगी ही और उनका इतिहास गुमनामी में छिप जाएगा। परन्तु धर्मी सदा तक जीवित रहेंगे।

एक लेखक ने टिप्पणी की है, ''मनुष्य की सब बुराइयों में से विश्वासघात सबसे अधिक घृणायोग्य है, ज़्योंकि इसमें धोखेबाज़ी, कायरता तथा बदला लेना सज़्मिलित है।'' बड़ी से बड़ी गलती विश्वासघात को उचित नहीं ठहरा सकती ज़्योंकि यह भरोसे तथा सुरक्षा के उन नियमों का नाश करती है जिन पर हमारा समाज टिका है। मसीहियत हमें क्षमा करना सिखाती है, परन्तु मित्रता तथा परोपकार की आड़ में क्रोध दिखाना एक ऐसी अधोगति का तर्क देता है जिसमें आम इनसानियत और न्याय लज्जित हो जाए!

''कुज़े का वैरी कुज़ा'' वाले हमारे समाज में और ''गला काट'' फिलास्फियों में मसीही लोग एदोमी दोएग को याद रखकर तरज़्की पाने के किसी भी साधन के रूप में विश्वासघात का इस्तेमाल न करने का निश्चय कर सकते हैं। विश्वासघात की कीमत अंत में बहुत अधिक चुकानी पड़ती है!